संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र कोष के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री जी के उद्‌गार

दिनांक 14 सितंबर, 2005
न्यूयार्क

मुझे राष्ट्रपति बुश, महासचिव कोफी अन्नान तथा विश्व के अन्य नेताओं के साथ संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र कोष के शुभारंभ के अवसर पर यहां उपस्थित होने का सम्मान मिला है। इस कोष का प्रस्ताव पिछले वर्ष संयुक्त राष्ट्र महासभा में राष्ट्रपति बुश द्वारा किया गया था और इसकी व्यापक प्रशंसा हुई है। इस कोष की प्रासंगिकता इसी बात से समझी जा सकती है कि एक वर्ष के भीतर ही यह प्रस्ताव एक हकीकत बन गया है।

इसके साथ ही मैं कैटरीना नामक समुद्री तूफान से बरबाद हुए न्यू ऑरलियंस तथा अन्य क्षेत्रों के लोगों के साथ हमदर्दी प्रकट करता हूं। राष्ट्रपति महोदय, इस विनाशकारी तूफान से बरबाद हुए लोगों के लिए आप जो मदद और राहत कार्य चला रहे हैं, आपके इन प्रयासों में हमारी पूरी सहानुभूति और सहयोग आपके साथ है।

गणमान्य महानुभावो, भारत को अपनी लोकतांत्रिक विरासत पर गर्व है जिसकी जड़ें देश की सहिष्णुता की सांस्कृतिक परंपराओं, विभिन्न विचारों के प्रति सम्मान तथा विभिन्न प्रकार की विविधताओं को अपने में समेटने की हमारी प्राचीन परंपरा में निहित है। महात्मा गांधी ने अहिंसा के संघर्ष में हमारा नेतृत्व केवल भारत को औपनिवेशिक शासन से मुक्ति दिलाने के लिए ही नहीं किया बल्कि भारतवासियों को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों का इस्तेमाल सुनिश्चित करने के लिए भी किया। वे यह बात अच्छी तरह जानते थे कि जब तक भारत के जन-जन को लोकतांत्रिक अधिकार नहीं मिल जाते तब तक औपनिवेशिक शासन से मुक्ति पाने का कोई अर्थ नहीं होगा। हम स्वतंत्रता, समानता और न्याय के आदर्शों से भी प्रेरित थे जो कि महान फ्रांसीसी और अमरीकी क्रांतियों के प्रामाणिक चिन्ह रहे हैं। आजादी के प्रति भारत की जागृति ने एशिया और अफ्रीका में आजादी के आंदोलनों को प्रेरित किया। उसके परिणामस्वरूप, दुनिया के नक्शे पर कई स्वतंत्र और गौरवशाली राष्ट्रों का उदय हुआ। अपने भाग्य का विधाता स्वयं बनने के उनके संघर्ष में भारत ने उनके प्रति पूरी सहानुभूति और सहयोग का रवैया अपनाया। हमारे विचार में लोकतांत्रिक आदर्श मानव जाति की साझी विरासत है। जिन भाग्यशालियों ने लोकतंत्ररूपी फल का स्वाद चख लिया है, उनका यह दायित्व है कि वे इसके लाभों को अन्य को भी बांटें।

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के नाते भारत के लिए संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र कोष की संकल्पना का स्वागत और समर्थन करने वाले पहली पंक्ति के देशों में खड़ा होना स्वाभाविक ही था। हमारा मानना है कि सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार पर आधारित लोकतंत्र हमारे देश के सर्वाधिक गरीब नागरिक को अधिकार संपन्न बनाता है और उसे सम्मान तथा गरिमा का भाव प्रदान करता है। गरीबी, निरक्षरता या सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन लोकतंत्र के संचालन को बाधित नहीं करते। इसके ठीक विपरीत 50 वर्षों से भी अधिक का लोकतांत्रिक शासन का हमारा अनुभव यह दिखाता है कि विकास की चुनौती को सफलतापूर्वक पार करने के लिए लोकतंत्र किस तरह एक सर्वाधिक शक्तिशाली औजार है। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि केवल लोकतंत्र ही यह आश्वासन देता है कि हमारे समाज के सबसे गरीब नागरिकों की विकास संबंधी अपेक्षाओं का ध्यान रखा जाएगा। यह लोकतांत्रिक प्रणाली की सबसे अद्‌भुत शक्ति है।

लोकतंत्र एक शक्तिशाली आदर्श है लेकिन इसके सफल संचालन के लिए मजबूत और चिर-स्थायी संस्थाएं, कानून एवं कार्य-पद्धतियां और एक संसदीय संस्कृति का विकास आवश्यक है जिनका सार-तत्व सत्ता में बैठे लोगों की यह जिम्मेदारी है कि वे देश के आम नागरिकों का ध्यान रखें। एक मजबूत और स्वतंत्र न्यायपालिका, एक स्वतंत्र प्रेस, पेशेवर सिविल तथा सैन्य स्थापनाएं, अल्पसंख्यकों, महिलाओं और बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए संवैधानिक रूप से अधिकार प्राप्त संस्थाएं और एक स्वतंत्र निर्वाचन तंत्र; ये सब लोकतंत्र के आवश्यक हिस्से-पुर्जे हैं। शिक्षा का भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। नागरिकों को बचपन से ही लोकतंत्र की संस्कृति या लोकतांत्रिक मिजाज़ को जज्ब कर लेना चाहिए। उन्हें व्यक्तिगत रूप से अपने अधिकारों और नागरिकों के रूप में अपने दायित्वों तथा जिम्मेवारियों का भी पता होना चाहिए।

महानुभावो, हम संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र कोष के शुभारंभ का स्वागत करते हैं क्योंकि यह हमें संस्थागत तथा मानवीय क्षमताएं तैयार करने का साधन मुहैया करवाता है जो कि लोकतंत्र के सफल संचालन के लिए आवश्यक हैं। भारत अपने समृद्ध अनुभवों, संस्थागत क्षमताओं तथा प्रशिक्षण संबंधी आधारभूत ढांचे का लाभ उन राष्ट्रों को भी देता आ रहा है जो हमारे मूल्यों और आस्थाओं में विश्वास रखते हैं और हमसे सहायता चाहते हैं। हम लोकतंत्र कोष तथा दुनिया के लोकतांत्रिक देशों के सक्रिय भागीदार के रूप में और भी बहुत कुछ करने को तैयार हैं।

इस संबंध में मैं यह घोषणा करना चाहता हूं कि हम शीघ्र ही लोकतंत्र के संबंध में सूचना और अनुभवों के आदान-प्रदान हेतु एक मंच मुहैया कराने के लिए इंटरनेट पर जल्दी ही एक केंद्र स्थापित करेंगे। हम अपने इस प्रयास में दूरस्थ शिक्षण तथा सैटेलाइट नेटवर्क सहित नई-नई प्रौद्योगिकीयों का इस्तेमाल करना चाहते हैं। इस पहल में भागीदारी करने वालों का हम स्वागत करेंगे।

महानुभावो, हम वैश्वीकरण के एक ऐसे युग में रह रहे हैं जो गरीबी, अज्ञानता और बीमारियों की युगों पुरानी चुनौतियों का मुकाबला करने की हमारी इच्छा में हर दिन हमारे सामने नए अवसर पैदा कर रहा है। यदि हम चाहते हैं कि वैश्वीकरण की इस अंधाधुंध प्रगति की दौड़ में बड़ी संख्या में लोग बहुत पीछे न छूट जाएं तो हमें निश्चित रूप से अपेक्षाकृत कमजोर लोगों को सशक्त बनाना होगा। केवल लोकतंत्र ही इस बात को सुनिश्चित कर सकता है कि वे भी शांति और खुशहाली की इस सहस्राब्दि में साझीदार बनें।